‘हमारी हालत बलि के बकरे सी थी’

कुर्बान अली
कंसलटेंट
दूरदर्शन न्यूज़

बात 1978 की है। कुलदीप नैयर पाकिस्तान गए थे और वहां से आकर उन्होंने एक लेख लिखा। पाकिस्तान में रहने वाले मेरे रिश्तेदार कुछ और हाल बताते थे, जबकि कुलदीप नैयर ने अपने लेख में इससे अलग हटकर विवरण दिया था। ऐसे ही नादानी में मैंने उन्हें एक खत लिख दिया। यही पत्र लिखना मेरे पत्रकार बनने का कारण बना। उन्होंने कहा कि हो सकता है तुम जो कह रहे हो वह सही हो, लेकिन मैंने जो देखा वह लिखा। कभी दिल्ली आओ तो मिलो। यह मेरे लिए काफी प्रोत्साहित करने वाली बात थी कि उनके जैसा वरिष्ठ पत्रकार मेरे जैसे युवा की राय पर ध्यान दे रहा है।

सन् 80 से ही मैंने लिखना शुरू कर दिया। इस बीच मैंने स्थानीय स्तर की बहुत सारी रिपोर्टिंग की, लेकिन 85 में अलीगढ़ जिले के अतरौली कस्बा में एक घटना घटी। वहां पुलिसवाले एक लड़के को गोली मारकर उसकी लाश को बहुत दूर तक खींचकर ले गए थे। उस पर मैंने जनसत्ता में एक लेख लिखा था। यह मेरी पहली रिपोर्टिंग थी राष्ट्रीय स्तर के किसी अखबार में।

मेरी सबसे यादगार रिपोर्टिंग 6 दिसंबर 1992 की है। इस दिन अयोध्या में बाबरी मस्जिद को गिराया गया था जिसका मैं प्रत्यक्षदर्शी था। हालांकि मैं उस समय संडे ऑब्जर्वर के लिए रिपोर्टिंग करने गया था लेकिन 85–86 से ही मैं बीबीसी का स्ट्रिंगर भी था। इसलिए यह रिपोर्टिंग मैंने बीबीसी उर्दू सर्विस के लिए की। आज भी लोग मुझे उस रिपोर्ट के लिए याद करते हैं। मुझे याद है मैं और मार्क टली पांच दिसंबर को अयोध्या पहुंच गए थे। फैजाबाद के शाने–अवध होटल में हम रूके थे और उसी दिन लगने लगा था कि मस्जिद ढहा दी जाएगी। छह तारीख को दस बजे हमलोग वहां पहुंच गए थे। 11 बजकर 20 मिनट पर वहां पत्थरबाजी शुरू हुई। लोगों ने अवरोधक तोड़कर मस्जिद पर हमला कर दिया। उस वक्त मेरे साथ मार्क टली (उस समय बीबीसी ब्यूरो प्रमुख) भी थे। उस समय अयोध्या में पूरी दुनिया का मीडिया था। मार्क को रिपोर्ट फाइल करनी थी। उस समय न तो सेल्युलर फोन थे और न ही अयोध्या में कोई दूसरी व्यवस्था थी।

मार्क ने फैजाबाद के सेंट्रल टेलीग्राफ ऑफिस आकर रिपोर्ट फाइल की। हमने भी अपने दफ्तर में बताया कि लोगों ने अब बाबरी मस्जिद को तोड़ना शुरू कर दिया है। इसके बाद हमने दोबारा जाने की कोशिश की। लेकिन रास्ते में अड़चनें लगा दी गईं। फैजाबाद और अयोध्या के बीच चार–पांच किलोमीटर की दूरी है। हमें फिर से अयोध्या जाने नहीं दिया गया। हम इंतजार करने लगे कि रैपिड एक्शन फोर्स और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल अयोध्या जाने लगेगी तो उनके साथ चले जाएंगे। वे लोग जब जाने लगे तो उन्हें भी रोक दिया गया। चूंकि हमें रिपोर्ट करनी थी इसलिए हम एक दूसरे रास्ते से गए। स्थानीय अखबार दैनिक जागरण के संपादक विनोद शुक्ल और उनकी पत्नी के साथ हम अयोध्या पहुंचने में सफल रहे।

वहां हमें पहुंचते ही भीड़ ने घेर लिया। हमारे साथ मार्क टली को बैठा देखकर उन्होंने पूछा कि तुम इसको लेकर क्यों आए हो। उन लोगों ने मार्क को मारना शुरू कर दिया। मार्क को बचाने के चक्कर में हमारी भी पिटाई हुई। तभी उनके बीच के एक युवक ने सौभाग्य से कहा कि इन्हें यहां क्यों मार रहे हो। अभी कार सेवा हो रही है और मस्जिद ढहाई जा रही है। अगर इन्हें अभी मार दिया तो सबका ध्यान इधर बंट जाएगा। तो उन लोगों ने हम पांचों, मुझे, मार्क टली, विनोद शुक्ल, उनकी पत्नी और दैनिक जागरण के स्थानीय संवाददाता सरल झाप्टे को एक कमरे में बंद कर दिया। वहां तैयारी होने लगी कि हम लोगों को कैसे मारा जाए, भाले से मारा जाए कि फरसे से काटा जाए। बलि के बकरे सी हमारी हालत थी।

किसी तरह सरल झाप्टे वहां से निकलने में सफल रहे। दो घंटे के बाद अयोध्या के उस समय के सबसे बड़े महंत और पुजारी ने हमें आकर बचाया। जब छह बजे बाबरी मस्जिद पूरी तरह ध्वस्त हो गई तब हमें उनकी हवेली में लाया गया। फिर वहां से हम पीएसी के ट्रक में रात साढ़े आठ बजे अयोध्या से फैजाबाद पहुंचे। उस समय सेटेलाइट टेलीविजन नहीं आया था। सरकारी मीडिया दूरदर्शन और आकाशवाणी कह रहे थे कि 'विवादास्पद ढांचे' को वहां नुकसान पहुंचा है। इस घटना की ब्रेकिंग न्यूज मैंने बीबीसी को दी थी। बीबीसी के लिए अपनी रिपोर्टिंग में मैंने कहा कि मलबा भी वहां से उठाकर लोग ले गए, जो कार सेवक थे। करीब डेढ़ हजार से दो हजार पत्रकारों के सामने मस्जिद ढहा दी गई। पुलिस प्रशासन चाय पीती रही, जबकि केंद्रीय पैरा मिलिटरी भी कुछ न कर सकी।

उस समय इस घटना के दौरान बहुत सारे पत्रकारों की पिटाई हुई खासकर महिला पत्रकारों के कपड़े फाड़े गए और उनके साथ बदसलूकी की गई। एक भी ऐसा कैमरामेन नहीं बचा जिसकी पिटाई न की गई हो। मार्क टली को किसी तरह हम बचाकर ला पाए। न्यूयार्क टाइम्स में उस समय एक लेख लिखा गया था, लिखनेवाला न तो हिंदू था और न ही मुसलमान, उसमें कहा गया था –''भारत के सभ्य समाज ने 500 साल पुरानी इमारत को गिरा दिया। यह कैसा सभ्य समाज है।'' चूंकि अमेरिका का इतिहास मात्र 300 साल पुराना है। हाल के चालीस–पचास बर्षों में ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद यह सबसे बड़ी घटना थी जिसको देखना और रिपोर्ट करना एक बड़ा अनुभव है।

इसी तरह एक घटना 1987 की है। मेरठ, मलियाना और हाशिमपुरा में दंगे हुए। मैंने उसकी रिपोर्टिंग रविवार पत्रिका के लिए की। तीन महीने तक मैं दिल्ली से रोज मेरठ जाता था। वह कभी न भूलने वाला अनुभव है, क्योंकि उस दंगे में कई बार मेरी जान जाते–जाते बची थी। मैं हैरान हूं कि कैसे उत्तर प्रदेश पुलिस ने 150 मुस्लिम नौजवानों को उठाकर गोली मार दी। वह मंजर अक्सर मेरे दिमाग में घूमता रहता है। मैं कई महीनों तक उससे परेशान रहा।

दुर्भाग्य की बात यह है कि करीब 20 साल के बाद भी दोषियों को कोई सजा नहीं मिल पाई है, न ही दंगा पीड़ितों को कोई मुआवजा मिला है। जांच आयोग की जो रिपोर्ट आई है उस पर कोई अमल नहीं हो पाया है। राजधानी दिल्ली से 60 किलोमीटर की दूरी पर नाक के नीचे यह सब कुछ हुआ। उस समय के प्रधानमंत्री राजीव गांधी और सोनिया गांधी भी वहां गए थे। लोगों को काफी उम्मीदें थीं लेकिन कुछ नहीं हुआ।

हाशिमपुरा के इस दंगे में पुलिस ने जुल्फिकार नामक एक व्यक्ति को बर्बरता से मारा और उसे मरा हुआ समझकर छोड़ दिया गया। मेरे सहित कुछ पत्रकारों की टीम ने उसे दिल्ली लाकर इलाज कराया था। अभी भी उस घटना के लिए 35 पुलिसवालों पर मुकदमा चल रहा है, लेकिन आज तक न्याय नहीं मिल पाया है। उस समय के एसएसपी विभूति नारायण राय ने अपने ही लोगों

(पुलिसवालों) के खिलाफ मुकदमा दायर किया। उस समय के उत्तर प्रदेश के गृहमंत्री गोपीनाथ दीक्षित का बयान आया था कि पुलिस के खिलाफ कोई कार्रवाई इसलिए नहीं की जा रही है क्योंकि इससे पुलिसवालों का मनोबल गिर जाएगा। बाद में हम जुल्फिकार की दादी के पास गए थे। हमने कहा कि वह ठीक है और दिल्ली में रह रहा है। उस समय जुल्फिकार तत्कालीन सांसद शहाबुद्दीन के पास रह रहा था।

इसी तरह रविवार पत्रिका के लिए मैंने देवरिया जिले में हुए नरसंहार, मरिचेहवा कांड की रिपोर्टिंग की थी। उसको कवर करने के लिए मुझे 60 किलोमीटर नेपाल में और 20 किलोमीटर बिहार में चलना पड़ा था। मैं 5–6 किलोमीटर तो पैदल भी चला था। कई जगह हमें अपने कपड़े ऊपर कर पानी में से गुज़रना पड़ा। जंगल पार्टी ने यह नरसंहार किया था।

एक और घटना 1990 की है। उस समय केंद्र में विश्वनाथ प्रताप सिंह और उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव की सरकार बनी थी। दिसंबर आते–आते देश भर में माहौल खराब हो गया। रथ यात्रा हो रही थी। उसी जमाने में उत्तर प्रदेश में भी कई बड़े दंगे हुए। बिजनौर से लेकर आगरा तक पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक भी ऐसा शहर नहीं बचा था जहां दंगे नहीं हुए थे। उस समय मैं संडे ऑब्जर्वर में था। एक समय तो ऐसा लग रहा था कि गृह–युद्ध छिड़ जाएगा और हम कभी भी इससे निकल नहीं पाएंगे। लेकिन मैं सलाम करता हूं अपने देश को और इसकी जनता को जो सांप्रदायिक नहीं हुई, यह एक बड़ी बात है। ■

प्रस्तुति : प्रभात चन्द्र झा